



सखियाँ जगा रही हैं
 यशुदा मना रही हैं
 उठना ओ लाल मेरे टोली बुला रही हैं

सखियाँ-----

देखो रे लोग कान्हा के खेल
 हँस-हँस के माटी खाये
 नटखट हैं ये झटपट से ये
 हँस-हँस के मुँह दिखाये
 हिय से लगा रही हैं
 माखन खिला रही हैं

सखियाँ जगा-----

आगे तूफान पीढ़े बरसात
 ऊपर गगन पे बिजली
 सोचे न बात दिन है कि रात
 कान्हा की टोली निकली
 परवत उठा रही हैं
 ब्रज को बचा रही हैं

सखियाँ जगा-----

वंशी की टेर लगती न देर
 क्या होगा फिर न सोचें ३३३३
 शा सबको प्यार जीना दुश्वार
 धुन वंशी की जो खींचे
 तट पे बुला रही है
 सबको नचा रही है

सखियाँ जगा-----

राधा का नाम न कर बदनाम
 रो रो पटकती सिर को ३३३
 हिम्मत दी हार कर इंतजार
 "श्रीबाबाश्री" लौट आओ बृज को
 मेरी सांस जा रही है
 तेरे पास आ रही है

सखियाँ-----